Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

JOS

यहोशू 1:1–2:24, यहोशू 3:1–5:12, यहोशू 5:13–8:29, यहोशू 8:30–12:24, यहोशू 13:1–21:45, यहोशू 22:1–24:33

यहोशू 1:1–2:24

यहोशू की पुस्तक व्यवस्थाविवरण में दर्ज इस्राएल की कहानी को आगे बढ़ाती है।

मूसा की मृत्यु के बाद यहोशू नया अगुवा था।

परमेश्वर ने वादा किया था कि वे यहोशू के साथ वैसे ही रहेंगे जैसे वे मूसा के साथ रहे।

यहोशू को मूसा की व्यवस्था का अध्ययन, स्मरण और उसका अनुकरण करना आवश्यक था।

परमेश्वर ने वादा किया कि यहोशू को परमेश्वर की प्रजा को कनान में बसाने में सफलता मिलेगी।

राहाब ने पहचाना कि इस्राएल के परमेश्वर ही सच्चे परमेश्वर है।

उसने इस्राएलियों द्वारा कनानियों को बाहर निकालने की परमेश्वर की योजना को रोकने की कोशिश नहीं की।

यहोशू द्वारा भेजे गए भेदियों ने बताया कि कनानी लोग इस्राएलियों के बारे में जानते थे।

इन लोगों के समूह को पता था कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह भूमि देने का वादा किया था।

भेदियों को पूरा विश्वास था कि परमेश्वर ऐसा करेंगे।

यह कादेशबर्ने में अधिकांश भेदियों द्वारा कही गई बातों से बहुत अलग थी।

यहोशू 3:1–5:12

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र में गुलामी से बचाया, तो उन्होंने जल के साथ एक चमत्कार किया।

परमेश्वर ने लाल समुद्र के जल को विभाजित किया और इस्राएली सूखी भूमि पर चलकर पार हुए। परमेश्वर ने अपने लोगों को कनान में ले जाने के लिए जल के साथ एक और चमत्कार किया। उन्होंने यर्दन नदी के प्रवाह को रोक दिया। एक बार फिर इस्राएली सूखी भूमि पर चलकर पार हुए।

वाचा का सन्दूक इस बात का चिन्ह था कि परमेश्वर उनके साथ थे जब वे नदी पार कर रहे थे। जब कनानी शासकों ने सुना कि क्या हुआ है, तो वे भयभीत हो गए।

गिलगाल में, इस्राएलियों ने नदी के तल से इकट्ठा किए गए 12 पत्थर स्थापित किए। ये पत्थर उन्हें यह याद दिलाने के लिए थे कि वे अपने बच्चों को सिखाएं कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया था।

गिलगाल में भी, इस्राएलियों ने पुरूषों का खतना करने के बारे में परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया। यह इस बात का चिन्ह था कि वे सीनै पर्वत की वाचा के प्रति समर्पित थे।

जब इस्राएलियों ने फसह का पर्व मनाया, तो उन्होंने अब मन्ना नहीं खाया। उन्होंने कनान में उगाया हुआ भोजन खाया। इससे यह दिखाया गया कि परमेश्वर अपनी अब्राहम से की गई एक प्रतिज्ञा को पूरा कर रहे थे। यह प्रतिज्ञा अब्राहम के वंशजों को वह भूमि देने की थी।

यहोशू 5:13–8:29

प्रभु की सेना के सेनापति एक आत्मिक व्यक्तित्व थे। उन्होंने यह बात यहोशू को स्पष्ट की।

कनान में इस्राएलियों की लड़ाइयाँ केवल भूमि पर नियंत्रण पाने का तरीका नहीं थीं। और उन्हें उन तरीकों से नहीं लड़ा जाना था जैसे आमतौर पर लोगों के समूहों के बीच युद्ध लड़े जाते थे। ये लड़ाइयाँ एक माध्यम थीं जिनसे परमेश्वर कनानियों के विरुद्ध न्याय लाते। परमेश्वर ने इस न्याय को लाने के लिए इस्राएलियों के माध्यम से कार्य करने का चयन किया।

कभी-कभी परमेश्वर ने सारी लड़ाई स्वयं लड़ी। अन्य समय में इस्राएलियों को परमेश्वर पर निर्भर रहते हुए भी योजना बनानी पड़ती थी और लड़ना पड़ता था। जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी, तो इस्राएलियों को युद्ध में सफलता मिली। इसका अर्थ था कि कनानी नष्ट हो गए। कई वर्षों पहले परमेश्वर ने चेतावनी दी थी कि कनानियों का न्याय होगा। यह उत्पत्ति 15:16 में दर्ज है।

इस्राएलियों ने यरीहो के खिलाफ युद्ध में सफलता प्राप्त की। उन्होंने ऐ के खिलाफ दूसरा युद्ध भी जीता। जब इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया, तो उन्हें सफलता

नहीं मिली। इसका मतलब था कि इस्राएली नष्ट हो गए बजाय कनानियों के। यह ऐ के खिलाफ पहली लड़ाई में हुआ।

आकान ने यरीहो से उन वस्तुओं को रखा था जो प्रभु के लिए अलग की गई थीं। परमेश्वर ने इस्राएलियों को कनानियों की सभी वस्तुओं को रखने की अनुमति नहीं दी थी। कुछ युद्धों में, हर चीज और हर जीवित प्राणी को नष्ट करना था। अन्य समय में कुछ चीजों को नष्ट करना था और कुछ चीजें इस्राएली रख सकते थे।

यहोशू 8:30–12:24

एबाल पर्वत और गिरिज्जीम पर्वत पर इस्राएलियों ने फिर से सीनै पर्वत की वाचा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने ऐसा मूसा की व्यवस्था को जोर से पढ़कर किया।

उन्होंने वाचा की आशीष और वाचा के शाप भी जोर से पढ़े। व्यवस्थाविवरण 11:29 और व्यवस्थाविवरण अध्याय 27 में मूसा ने उन्हें इन बातों के बारे में निर्देश दिए थे।

पूरा इस्राएल समुदाय वहाँ था। इसमें राहाब जैसे बाहरी लोग भी शामिल थे, जो इस्राएलियों के साथ जुड़ गए थे। राहाब की तरह, गिबोन के हिब्बियों ने भी परमेश्वर के महान कार्यों के बारे में सुना था।

फिर भी उन्होंने उनके विरुद्ध न्याय लाने की परमेश्वर की योजना को रोकने का प्रयास किया। उन्होंने इस्राएलियों को धोखा देकर उनके साथ वाचा बाँधी। ये हिब्बी लोग बाहरी बन गए जो इस्राएलियों के बीच रहते थे और उनकी सेवा करते थे।

कनान में अन्यजातियों ने भी परमेश्वर की योजना को रोकने की कोशिश की ताकि न्याय न आ सके। उन्होंने ऐसा इस्राएलियों पर हमला करके किया। इससे यह दिखा कि वे हठी थे। उन्होंने राहाब के उदाहरण का अनुसरण नहीं किया, जिन्होंने यह पहचाना कि परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन करते हैं। इसलिए परमेश्वर उन जातियों के खिलाफ न्याय लाए। परमेश्वर ने यहोशू और इस्राएलियों को उन्हें नष्ट करने की अनुमति दी।

यहोशू 13:1–21:45

जिस भूमि का वादा परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों को दिया था, उसे इस्राएलियों के बीच विभाजित किया गया। यहोशू की पुस्तक प्रत्येक गोत्र को दी गई भूमि का विवरण देती है।

गाद और रूबेन के गोत्रों ने यरदन नदी के पूर्व में भूमि प्राप्त की। मनश्शे के आधे गोत्र ने भी ऐसा ही किया। बाकी गोत्रों ने यरदन नदी के पश्चिम में भूमि प्राप्त की।

कालेब ने हेब्रोन में भूमि प्राप्त की। लेवी ने अन्य सभी गोत्रों की भूमि में नगर और चारागाह प्राप्त किए। उनके नगरों में शरणनगर शामिल थे।

भूमि के बारे में सावधानीपूर्वक जानकारी रखना भविष्य में इस्राएलियों की मदद करेगा। यह जानकारी प्रत्येक गोत्र को उसकी सीमाओं के बारे में जानने में मदद करेगी ताकि वे उनके बारे में झगड़ा न करें। यह जानकारी गोत्रों को दिखाएंगी कि वे किस भूमि के लिए जिम्मेदार हैं। यह जानकारी यह भी दिखाती थी कि परमेश्वर ने अब्राहम से भूमि के बारे में किए गए वादे को कैसे पूरा किया।

कई कनानी अभी भी उन गोत्रों को दी गई भूमि में रहते थे। परमेश्वर ने वादा किया था कि वे ही उन्हें बाहर निकालेंगे। लेकिन इस्राएली उनके सहयोगी थे और उन्हें कड़ी मेहनत करनी होगी। यहोशू ने यह यूसुफ के परिवार को दिए गए निर्देशों में स्पष्ट किया। गोत्रों को भूमि साफ करनी थी और कनानियों को बाहर निकालना था। हर गोत्र ने उन निर्देशों का पालन नहीं किया।

यहोशू 22:1–24:33

जो भी अच्छी बातें परमेश्वर ने इस्राएलियों से वादा की थीं, वे पूरी हो गई थीं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि कनान देश में उनका काम समाप्त हो गया था।

यहोशू की पुस्तक में कुछ युद्धों का वर्णन है जिनमें परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए युद्ध किया। उन युद्धों में, परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए युद्ध जीतना संभव बनाया। वे विजय इस बात के संकेत थे कि परमेश्वर कैसे इस्राएलियों का उपयोग करते रहेंगे। वे उनका उपयोग कनानियों के विरुद्ध न्याय लाने के लिए करेंगे।

इस्राएलियों को परमेश्वर का विश्वासयोग्यता से अनुसरण करते रहना था। उन्हें उन कनानियों के साथ समुदाय में नहीं रहना था जो परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार करते थे। यहोशू ने इस्राएल के अगुवों को चेतावनी दी कि यदि वे ऐसा करेंगे तो क्या होगा। इस्राएली केवल परमेश्वर की ही आराधना नहीं करेंगे। फिर वे वाचा के शापों का सामना करेंगे। वे नष्ट हो जाएंगे और उस भूमि से निकाल दिए जाएंगे जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी।

अगुवों और लोगों ने एक बार फिर से सीनै पर्वत की वाचा के प्रति प्रतिबद्धता जताई। यरदन नदी के पास की वेदी पूर्व में स्थित गोत्रों के लिए एक स्मरण थी। वे कनान में नहीं रहते हुए भी परमेश्वर की वाचा के प्रति प्रतिबद्ध थे। शेकेम में चट्टान इस्राएल के सभी 12 गोत्रों के लिए एक साक्षी थी। यह दिखाता था कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने और सेवा करने का वचन दिया है।